International Journal For Applied Research in Science and Engineering
Volume 1, Issue 3, January-2017 *ISSN (Online): 2456-124X*

आचार्य चाणक्य के शैक्षिक विचार

डॉ. पूनम अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग
धर्मसमाज कॉलेज, अलीगढ़

प्रस्तावना :–

वर्तमान की जड़ें अतीत में विद्यमान होती हैं। भारत का अतीत गौरवमय रहा है, इससे वर्तमान अलौकिक हुआ है और भविष्य के प्रति आस्था उपजी है। भारत का अतीत सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक कारणों से उतना प्रभावित नहीं रहा है जितना कि यहॉ की आध्यात्मिकता ने उसे प्रभावित किया है। यहॉ पर मानव का जीवन दर्श–6 'सर्व भूते हिताना' रहा है। प्राचीन काल में आध्यात्मिकता से ही राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक धाराएँ प्रभावित हुई हैं। सत्याचरण, प्रेम, अहिंसा आदि पर ही सामाजिक जीवन की नींव रखी गई थी। संयोग तथा सहअस्तित्व इसका प्राण था। व्यक्ति समाज की आधारभूत इकाई था। जीवन का निश्चित उद्‌देश्य था, निश्चित आदर्श थे।

हमारे राष्ट्र की शिक्षा का इतिहास प्राचीन है। यह सर्वमान्य है कि लिपि से पूर्व साहित्य बन चुका था। गुरू–शिष्य परम्परा से पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप में इसकी रक्षा होती रही, इसी से वेद को श्रुति कहते हैं और यह क्रम चालू रहा। इस प्रकार सुनकर जो ज्ञान प्राप्त किया जाता था उसे स्मृति में स्थायी किया जाता था। उस काल के आप्तजन चलते–फिरते ग्रन्थालय थे। लिपि से पूर्व कण्ठ परम्परा से ही जीवित रहा।

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने विशाल शैक्षिक साहित्य को सुरक्षित रखा और ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मौलिक विचरणों एवं विद्वानों को जन्म दिया। इन्हीं विद्वानों में एक थे–चाणक्य।

चाणक्य के अनुसार शिक्षा या ज्ञान की समाज की संस्कृति की रक्षा करते हुए सम्भ्यता व

 Copyright 2017.All rights reserved.

संस्कृति रूप रथ को आगे बढ़ाती है। शिक्षा व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त चलने वाली एक निरन्तर व स्वाभाविक प्रक्रिया हे। शिक्षा की मनुष्य के मूलभूत या जन्मजात गुणों का विकास व प्रकटीकरण करते हुए उसे पूर्णता प्रदान करती है। इसीलिए चाणक्य ने कहा है –

''श्रुत्वा धर्म विजानाति श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिम्।
श्रुत्वा ज्ञानमवाप्रनोति श्रुत्वा मौक्षमत्राप्रयात्।।

अर्थात मनुष्य धर्मशास्त्रों को सुनकर उसका ज्ञात करता है तथा वह दुर्बुद्धि को छोड़ता है फिर ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली के राष्ट्रीयकरण की दृष्टि से आचार्य चाणक्य के शैक्षिक विचार आज भी पूर्णतः उपयोगी एवं प्रासंगिक हैं। अतः आचार्य चाणक्य के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करके स्वतंत्र भारत की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के निर्माण के लिये पर्याप्त योगदान किया जा सकता है।

चाणक्य ने शिक्षा और बुद्धिमता पर सब कार्यों की अपेक्षा अधिक जोर दिया है। वे कहते हैं कि मूर्ख आदमी भी सज्जन और बुद्धिमान की तरह दो पैर वाला होता है परन्तु वह चार पैर वाले वाले पशु से भी निकृट और गया–गुजरा माना जाता है क्योंकि उसके कार्य सदैव कष्ट पहुँचाने वाले होते हैं। चाणक्य कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ है तथा रूप और यौवन आदि से भी युक्त है, परन्तु विद्या ग्रहण न करने के कारण उसका अच्छे कुल में जन्म लेना ऐसा ही है जिस प्रकार बिना सुगन्ध के सुन्दर फूल। उनका मानना है कि किसी का सम्मान उसके गुणों के कारण होता है, रूप, यौवन के कारण नहीं। चाणक्य कहते हैं कि आज भी अधिकांश लोग यह बात नहीं जानते कि बच्चों से किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। उनका कहना है कि पॉच वर्ष तक की

 Copyright 2017.All rights reserved.

आयु के बच्चे से लाड़—दुलार, दस वर्ष तक की आयु तक ही डराना—धमकाना और यदि आवश्यकता पड़े तो ताड़ना दी जा सकती है, परन्तु जब बच्चा सोलह वर्ष की आयु तक पहुँच जाता है तब उसके मित्र के समान समझकर व्यवहार करना चाहिए। आचार्य ने बार—बार मनुष्यों को यह बताने, समझाने का प्रयत्न किया है कि यह मानव शरीर अत्यन्त मूल्यवान है।

विद्या को चाणक्य ने कामधेनु के समान बताया है, जिस तरह कामधेनु से सभी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं, उसी प्रकार विद्या से मनुष्य की सभी इच्छाएँ पूर्ण हो सकती हैं। इसलिए विद्या को मुन्त धन भी कहा गया है। चाणक्य कहते हैं कि व्यक्ति को तपस्या अकेले में करनी चाहिए। पढ़ने वाले विद्यार्थी मिलकर पढ़े ंतो उन्हें लाभ होता है। चाणक्य कहते हैं विद्या की प्राप्ति के लिये अभ्यास करना पड़ता है, बिना अभ्यास के विद्या चित्र के समान होती है।

गुरू की महिमा का वर्णन सर्वत्र किया गया है, परन्तु चाणक्य ने यह भी स्पष्ट किया है कि सामान्य जीवन में कौन किसका गुरू होता है। जिस प्रकार सोने को कसौटी पर घिसकर, आग में तपाकर उसकी शुद्धता की परख होती है, उसी प्रकार मनुष्य अपने अच्छे कर्मों और गुणों से पहचाना जाता है। चाणक्य कहते हैं कि मनुष्य को जीवन में भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। उसे निडर होकर कार्य करने चाहिए, यदि किसी भय की आशंका भी हो तो भी उसे घबराना नहीं चाहिए। संकट आने पर उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए। चाणक्य का मानना है कि कोई भी व्यक्ति वह वस्तु प्राप्त नहीं कर सकता, जिसे प्राप्त करने की इच्छा न हो और जो व्यक्ति स्पष्ट बात कहता है, उेस कपट करने की आवश्यकता नहीं अर्थात वह कपटी नहीं होता। विद्या अभ्यास से प्राप्त होती है और आलस्य से नष्ट हो जाती है। चाणक्य का कहना है कि क्रोध व्यक्ति को हस समय जलाता रहता है। मनुष्य जब विदेश में जाता है, तो उसका ज्ञान और उसकी बुद्धि ही उसका साथ देती है। चाणक्य का कहना है कि मनुष्य का आत्मबल ही उसका सबसे बड़ा बल है।

 Copyright 2017.All rights reserved.

जो मनुष्य शास्त्रों को पढ़ाता है अथवा उनके प्रवचन सुनता है, उसे ज्ञान प्राप्त होता है और उच्च पद की प्राप्ति होती है। चाणक्य का कहना है कि मनुष्य जीवन बड़े सौभाग्य से प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन को शुभ कार्यों की ओर लगाए, दूसरों की निन्दा आदि करना छोड़ दे। वेद आदि शास्त्रों को पढ़ने और शुभ कार्य करने से मनुष्य संसार में या को प्राप्त होता है। वे यह भी कहते हैं कि जैसी होनी होती है, मनुष्य की बुद्धि व कर्म भी उसी प्रकार के होते जाते हैं। इस संसार में समय ही ऐसी वस्तु है जिसे टाला नहीं जा सकता। चाणक्य ने कहा कि जब मनुष्य अपने स्वार्थ में अंधा हो जाता है जो उसे अच्छे–बुरे में अन्तर दिखाई नहीं देता। मनुष्य का छुटकारा अथवा बंधन उसके द्वारा किये जाने वाले कर्मो पर ही आश्रित होते हैं, क्योंकि वह जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है अर्थात् मनुष्य अपने कर्मों द्वारा ही संसार के बंधन से मुक्त होता है।

किसी विद्या की प्रति अथवा गुण सीखते ही समय भी मनय को संकोच नही करना चाहिए, परन्तु संकोच न करने का अर्थ यह नहीं कि मनुष्य अत्यन्त लोभी हो जाए। उसे चाहिए कि यह सब बातों में संतोष से काम ले, परन्तु कुछ बातें ऐसी भी होती है जिनके संबंध में संताेष करने से ही हानि होती है, जैसे विद्या, प्रभु स्मरण और दान देना आदि। चाणक्य का कहना है कि मनुष्य को सदैव सज्जनों और अपने से उत्तम वस्त्र की संगति करनी चाहिए अर्थात् मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए कि वह अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों से सम्पर्क बनाए, तभी वह संसार में सफल हो सकता है और नीच लोगों के साथ रहने में सदैव हानि होती है।

चाणक्य ने विद्या रूपी धन को सब धनों में श्रेष्ठ माना है। उनका कहना है कि जिस मनुष्य के पास विद्या रूपी धन नहीं, वह सच कहना है कि जिस मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने जीवन में जो भी कार्य करे, उसे अच्छी तरह सोच–विचार कर करें। अगला कदम उठाने से पहले आगे के कदम

 Copyright 2017.All rights reserved.

को रखने के स्थान को भली प्रकार देखना चाहिए, उसे चाहिए वह सदैव मन से भली प्रकार सोचकर एकाग्रह होकर अच्छे कार्य करें। विद्यार्थी के कर्तव्य की ओर ध्यान दिलाते हुए आचार्य कहते हैं कि जो विद्यार्थी विद्या प्राप्त करना चाहै, उसे ससुख की अभिलाशा छोड़ देनी चाहिए।

चाणक्य के कथनानुसार विद्यार्थी को विद्या की प्राप्ति के समय घर से मोह नहीं रखना चाहिए। यदि वह घर के मोह में फॅसा रहेगा तो उसे विद्या प्राप्त नहीं होगी। चाणक्य का कहना है कि गुणों की श्रेष्ठता को समझाना प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं है। जो उसके गुणों को नहीं समझता, वह उसकी निन्दा करने लगता है। विद्यार्थी के लिए कुछ और हिदायत देते हुए चाणक्य कहते हैं कि विद्यार्थी को काम, क्रोध, लोभ, मोह, खेल–मिशे और श्रृंगार तथा अधिक सोने की बचना चाहिए, उसे चाहिए कि इन सब बातों से ध्यान हटाकर अपना मन विद्या प्राप्त की ओर लगाए।

गुरू के महत्व को बताते हुए आचार्य चाणक्य बताते हैं कि यदि शिष्य गुरू को अपना सर्वस्व समर्पित कर दे तो भी गुरू का ऋण शिष्य पर से नहीं उतरता, क्योंकि गुरू ही शिष्य का प्रभु के संबंध में वास्तविक ज्ञान देता है। चाणक्य कहते हैं कि ज्ञान का कोई अन्त ही नहीं परन्तु मनुष्य का जीवन बहुत छोटा है, इसलिए उसको चाहिए कि वह सार को ग्रहण कर ले, क्योंकि उनका कहना है कि वेद आदि शास्त्रों के पढ़ने पर भी जिसे उनमें वर्णित आत्मा और परमात्मा का ज्ञान नहीं हुआ, उसका जीवन व्यर्थ है। व्यक्ति को प्रत्येक स्थिति में नम्र होकर रहना चाहिए अर्थात् जो नम्र होकर चलते हैं, वे इस भवसागर से पार हो जाते हैं और जो नम्र नहीं रहते, अभियान में चूर होकर ब्राह्मणों और सज्जनों का अपमान करते हैं, वह नष्ट हो जाते हैं।

आचार्य चाणक्य का कहना है कि विद्या गुरू से ही प्राप्त करनी चाहिए, स्वयं विद्या का अभ्यास करने से वह लाभ नहीं होता जैसा गुरू द्वारा प्राप्त की गई विद्या से होता है। आचार्य ने तप के महत्व को भी स्पष्ट किया है। उनका कहना है कि यदि मनुष्य में तप का अभाव है और वह लोभ में फॅसा

 Copyright 2017.All rights reserved.

हुआ है तो उसे और किसी बुराई की आवश्यकता नहीं है। यदि मनुष्य का स्वभाव दूसरों की निन्दा करना है तो चाणक्य इसे महान पापों की श्रेणी में रखते हैं। उन्होंने सत्य को ही तप बताया है अर्थात् जो व्यक्ति सत्याचरण करता है, उसे किसी अन्य तप की आवश्यकता नहीं है। आचार्य का मानना है कि यदि किसी चीज में कोई ऐसा गुण है जिससे अधिकांश लोगों को लाभ होता है तो उसके अवगुण महत्वहीन हो जाते हैं।

आचार्य चाणक्य के शैक्षिक विचार :–

आचार्य चाणक्य ने बताया है कि दुष्ट लोगों के संसर्ग से बुद्धिमान–बुद्धिमान मनुष्य को दुख उठाना पड़ता है। चाणक्य कहते हैं कि व्यक्ति को उसी स्थान पर रहना चाहिए जहाँ उसका सम्मान हो, जहॉ पर उसके भाई बन्धु हों, आजीविका के साधन हों। इसी संबंध में उनका अभिमत है कि जहाँ धनवान, वेद शास्त्रों को जानने वाले विद्वान, ब्राह्मण, राजा अथवा शासन–व्यवस्था, नदी व वैद्य न हो, वहॉ नहीं रहना चाहिए। मनुष्य को चाहिए कि वह अधिक लालच में न पड़ें। उसे वही कार्य करना चाहिए जिसके संबंध में उसे पूर्ण ज्ञान हो। जिस कार्य के संबंध में उसे ज्ञान न हो, उसे करने से हानि हो सकती है। चाणक्य ने कुल की दृष्टि से भेदभावों की बात नहीं मानी।

कुछ के पास अनेक पदार्थ होते हैं, परन्तु वे यथा तो उनका उपभोग नहीं जानते अथवा उपयोग की शक्ति नहीं होती। सुख उसी परिवार को प्राप्त है, जहाँ सब एक–दूसरे का सम्मान करते हों, एक–दूसरे में श्रद्धा रखते हों, अर्थात् पुत्र को पिता और पिता का पुत्र का ध्यान रखना चाहिए। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो व्यक्ति के सामने तो मीठी बातें करते हैं, परन्तु पीठ पीछे बुराइयॉ करते हैं, ऐसे लोगों से बचना चाहिए। चाणक्य का कहना है कि मन से सोची हुई बात का वाणी से भी उल्लेख नहीं करना चाहिए अर्थात् अपना रहस्य अपने मित्र को भी नही बताना चाहिए। चाणक्य ने बार–बार इस बात पर जोर दिया है कि माता–पिता को चाहिए कि वे अपनी संतान को गुणवान बनाएँ। उनका

 Copyright 2017.All rights reserved.

ध्यान रखें और उन्हें बिगड़ने न दें। आचार्य कहते हैं कि व्यक्ति को चाहिए कि वह अपना समय सार्थक बनाए, अच्छा कार्य करें। इसके साथ उनका कहना है कि सब लोगों को अपना कार्य अर्थात् कर्तव्य पूरा करना चाहिए।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि चाणक्य ने श्लोकों व सूक्तियों की रचना करते हुए भी नीति, शक्ति, शिक्षा, श्रद्धा दार्शनिकता तथा सामाजिक परिस्थतियों को उद्धत करने का कार्य किया है जो कि शिक्षा को प्रत्यक्ष आधार बनाता है। अतः उनके श्लोक व सूक्तियॉ शैक्षिक निहितार्थ से भरे हुए हैं और मानव जीवन के लिए उपयोगी और कल्याणकारी हैं। आचार्य चाणक्य के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता चाणक्य के शिक्षा के उद्देश्यों संबंधी विचार।

आचार्य चाणक्य ने शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में स्पष्टतः कहा है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिनिष्ठ नहीं होना चाहिए अर्थात् शिक्षा का उद्देश्य बालक को दश सेवा, समाजसेवा हेतु तेयार करना, उसे योग्य बनाना है ताकि विद्यार्थी अपना सर्वागीण विकास करके देश व समाज का एक सुयोग्य नागरिक व व्यक्ति बन सके।

चाणक्य के शैक्षिक नीति संबंधी विचार :–

चाणक्य विद्यार्थी के सम्पूर्ण सर्वागीण विकास करने वाली शैक्षिक नीति पर बल देते थे। चाणक्य के तक्षशिला विश्वविद्यालय में अध्यापन काल के दौरान वहॉ पर विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास हेतु कई विषय थे, जैसे– विज्ञान, दर्शन, आयुर्वेद, व्याकरण, गणित, अर्थात शास्त्र, ज्योतिष विज्ञान, भूगोल, खगोलविज्ञान, शल्य चिकित्सा विज्ञान कृषि विज्ञान तीरंदाजी आदि। अतः आचार्य चाणक्य के अनुसार शिक्षा इससे प्रकार की हो जो छात्रों के भविष्य में आने वाली समस्याओं का समाधान कर सकें।

विद्यार्थी के लिए दिये गये विचार :–

विद्यार्थी के संबंध में उनके विचारों से यह निष्कर्श निकलता है कि विद्यार्थी को अपना सम्पूर्ण

 Copyright 2017.All rights reserved.

विकास करने के लिए उसे विद्यालय में होने वाली विभिन्न गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। विद्यार्थी में दृढ़संकल्प, निश्चिय प्रवृत्ति, दृढ़प्रतिज्ञा, श्रम की निष्ठा, निर्भीकता, कठिन परिस्थितियों के समय वीरता, जिज्ञासु, शांति प्रवृत्ति गुण उसके विद्यार्थी जीवन में होने चाहिए। देश की सेवा हेतु हमशो पूर्व तैयार, गुरू के प्रति निष्ठा व विवश होना चाहिए। शिक्षा प्राप्ति के लिए छात्र को अपने मन व तन दोनों से पूर्ण तैयार होना चाहिए।

चाणक्य के साहित्यों से शैक्षिक निहितार्थ :–

आचार्य चाणक्य के ग्रन्थों में निहित शैक्षिक निहितार्थ बहुत महत्वपूर्ण हैं। चाणक्य के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया आजीवन ही नहीं, जन्म–जन्मान्तर तक चलने वाली प्रक्रिया है। चाणक्य के साहित्यों में शैक्षिक निहितार्थ में विद्यार्थी के कर्तव्य, गुरू के कर्तव्य, शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षण उद्‌देश्य विधि एवं प्रविधि के विचार :–

चाणक्य के अनुसार गुरू–शिष्य संबंध केवल पढ़ने–पढ़ाने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि गुरू को हर समय शिष्य को निर्देशित करते रहना चाहिए। शिक्षक का संबंध शिक्षार्थी के साथ ऐसा हो जो उसे असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर मृत्यु से अमरत्व की ओर जाए। शिक्षार्थी के जीवन ही हर कठिन परिस्थिति में शिक्षक का सहयोग आवश्यक है। गुरू की आत्मिक दृष्टि शिष्य को लक्ष्य प्राप्त करवाने में होनी चाहिए। शिक्षक में उदारता, दयालु प्रवृत्ति कर्तव्यनिष्ठ, अच्छा चरित्र व व्यवहार, वाणी में मधुरता आदि गुण होने चाहिए। शिक्षक को विभिन्न भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए जिससे वह शिक्षण कौशल को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सके। शिक्षक का छात्र व देश के प्रति दूरदर्शिता व मौलिक दृष्टि का होना आवश्यक है। शिक्षक में छात्र के प्रति दयालुता होनी चाहिए तथा उसे हर समय छात्र की सहायता करनी चाहिए। गुरू के आचरण से ही विद्यार्थी को सम्पूर्णता प्राप्त होनी चाहिए।

 Copyright 2017.All rights reserved.

चाणक्य के विद्यालय एवं समाज संबंधी विचार :–

आचार्य चाणक्य के अनुसार विद्यालय का वातावरण ऐसा होना चाहिए जहॉ बालक का समग्र विकास हो। शिक्षण संस्थाओं में चाहिए जहॉ बालक का समग्र विकास हो। शिक्षण संस्थाओं में वास्तविक शिक्षण प्रदान करने का उद्‌देश्य निहित होना चाहिए। विद्यालय की समय सारिणी ऐसी होनी चाहिये। जिसके अंतर्गत विद्यार्थी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण होता हो। अनुशासन का कठोर पालन विद्यालय में होना चाहिए। विद्यालय में उन सभी पाठ्‌यक्रमों का समावेश होना चाहिए जो विद्यार्थी के भविष्य को निर्धारित करता हो। विद्यालय में सभी शिक्षण विधियों से अध्ययन करवाना आवश्यक होना चाहिए जिसमें विद्यार्थी को ज्ञान की प्राप्ति सरलता से हो सके। विद्यालय से ही समाज व राष्ट्र का निर्माण होता है। समाज लोगों में एक–दूसरे की सहायता करने पर बल देता है। भारतीय संस्कृति को हस्तांतरित करने का एकमात्र स्थान समाज ही है जिसमें लोगों की अपनी–अपनी भावनाओं को आदर प्राप्त होता है। सामाजिक दृष्टिकोण से ही देश का भविष्य निर्धारित होता है।

संदर्भ सूची

1. वर्मा, वी.पी. भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल एण्ड संस, आगरा–20021
2. शर्मा पंडित सत्यनारायण–सम्पूर्ण चाणक्य नीति, साक्षी प्रकाशन, दिल्ली–20151
3. श्रीवास्तव, उमाशंकर प्रसाद कौटिल्य का अर्थशास्त्र, समीक्षात्मक अध्ययन, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली–1988
4. नई शिक्षा, मासिक पत्रिका।

 Copyright 2017.All rights reserved.